

भगत कबीर – सबद ३
अब मोहि जलत राम जल पाइआ ॥
राग गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२३

अब मोहि जलत राम जल पाइआ ॥
राम उदक तन जलत बुझाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
मन मारण कारण बन जाईऐ ॥
सो जल बिन भगवंत न पाईऐ ॥१॥
जिह पावक सुर नर है जारे ॥
राम उदक जन जलत उबारे ॥२॥
भव सागर सुख सागर माही ॥
पीव रहे जल निखुटत नाही ॥३॥
कहि कबीर भज सारिंगपानी ॥
राम उदक मेरी तिखा बुझानी ॥४॥१॥

सार: द्वैत और अद्वैत के विचार हमें सृष्टि की आपसी जुड़ाव की गहरी समझ प्रदान करते हैं। द्वैत उन विरोधाभासों को दर्शाता है जो हमारे अनुभवों को आकार देते हैं जबकि अद्वैत हमें इन भिन्नताओं से ऊपर उठकर गहरे एकत्व को पहचानने के लिए प्रेरित करता है। इन दोनों विपरीत शक्तियों को समझकर हम अस्तित्व की विविध ऊर्जाओं के बीच संतुलन विकसित कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण हमें जीवन की जटिल बुनावट की सराहना करने में मदद करता है और यह याद दिलाता है कि हमारे मतभेदों भिन्नताओं के बावजूद हम सभी ब्रह्मांड की एकता का हिस्सा हैं।

अब मोहि जलत राम जल पाइआ ॥
द्वैत की आग में जलते मन को एकता का ज्ञान शांति प्रदान करता है।

राम उदक तन जलत बुझाईआ ॥ १॥ रहाउ ॥

एकता की समझ द्वन्द की पीड़ा से जलते हुए मन को शांत करती है। (१)(विराम)

मन मारण कारण बन जाईऐ ॥

मन को वश में करने के लिए कुछ लोग जंगल में चले जाते हैं।

सो जल बिन भगवंत न पाईऐ ॥ १॥

समस्त सृष्टि के आपसी सम्बन्ध को समझे बिना, कोई भी सर्वव्यापी जागरूकता को नहीं पहचान सकता। (१)

जिह पावक सुर नर है जारे ॥

द्वैत ने श्रेष्ठ देवताओं और साधारण नश्वर मनुष्यों, दोनों को भस्म कर दिया है।

राम उदक जन जलत उबारे ॥ २॥

लेकिन एकता के ज्ञान ने द्वैत से जूझ रहे लोगों को आध्यात्मिक रूप से बचा लिया है। (२)

भव सागर सुख सागर माही ॥

विशाल और भयावह विश्व-सागर में एक आंतरिक शांत महासागर मौजूद है।

पीव रहे जल निखुटत नाही ॥ ३॥

मैं लगातार एकता के लाभ का उपभोग करता हूँ लेकिन न यह कभी खत्म होता है और न ही यह कभी खत्म होता दिखता है। (३)

कहि कबीर भज सारिंगपानी ॥

कबीर चिंतन करने के लिए कहते हैं, जैसे एक तीरंदाज अपने लक्ष्य में सटीकता सुनिश्चित करने के लिए निशान पर ध्यान केंद्रित रखता है।

राम उदक मेरी तिखा बुझानी ॥४॥१॥

एकता के ज्ञान ने मेरी आध्यात्मिक प्र्यास को बुझा दिया है। (४)(१)

तत्त्व: भगत कबीर हमें सुझाव देते हैं कि अपने विचारों और इरादों को सभी प्राणियों को जोड़ने वाली एकता पर केंद्रित करें। वह इसकी तुलना एक तीरंदाज़ से करते हैं जो अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखता है। इस तरह का ध्यान हमें द्वैत और अहंकार की व्याकुलता से ऊपर उठने में मदद करता है। यह गहरा ज्ञान हमारे अस्तित्व को समझने में सहायता करता है, जिससे हम ब्रह्मांड में व्याप्त शांति और सामंजस्य के साथ खुद को जोड़ पाते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com